(E - 119) धन्य मुनीश्वर आतम हितमें

(राग–अेक तूंही आधार हो जगमें.....ओ मेरे भगवान....की.....)

धन्य मुनीश्वर आतम हितमें छोड़ दिया परिवार.....कि.....
तुमने छोड़ा सब घरवार.....!
धन छोड़ा वैभव सब छोडा समझा जगत असार.....कि
तुमने छोड़ा सब संसार.....

कायासे ममताको टारी, करते सहन परिषह भारी;
पंच महाव्रत के हो धारी, तीन रतन के बने भंडारी;
आत्म स्वरूपमें झूलते करते निज आतम उद्धार.....कि
तुमने छोडा सब घरवार.....धन्य० १

राग द्वेष सब तुमने त्यागे वैर विरोध हृदयसे भागे,
परम आतम के अनुरागे, वैरी कर्म पलायन भागे,
सत्सन्देश सुना, भविजनका करते बेडा पार.....कि
तुमने छोड़ा सब संसार.....धन्य० २

होय दिगंबर वनमें विचरते निश्चल होय ध्यान जब धरते,
निजपदके आनंदमें झूलते उपशमरसकी धार बरसते,
मुद्रा सौम्य नीरख कर वृद्धि नमता वारंवार....कि
तुमने छोड़ा सब घरबार....धन्य० ३